ISSN–2277- 8721

EIIRJ

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

Volume-X, Issues-I Jan-Feb 2021

ओमप्रकाश वाल्मीकि की काव्यभाषा

डॉ.. सिद्धेश्वर वि. गायकवाड

सहयोगी प्राध्यापक

बी.जे.एस. कॉलेज, वाघोली, ता. हवेली जि. पुणे

ओमप्रकाश वाल्मीकि का परिचय:

ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदी दलित साहित्य का प्रतिष्ठित नाम हैं। आपने दलित जीवन की पीडा को भोगा है, जिससे आपकी व्यथा प्रामाणिक बन पडी है। आपने अपनी कविताओं में दलित जीवन की उपेक्षाएँ, प्रताडनाएँ, विवंचनाएँ, सुख–दुख, कष्ट–क्लेश, घूटन तथा संघर्ष इ. का चित्रण किया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म ३० जून १९५० में बरला जनपद जिला मुजफ्फरपुर, उत्तरप्रदेश 'चूहडा' जाति में हुआ। अस्पृश्य जाति में पैदा होनेसे इन्हे छुआ छूत, भेदभाव, निर्धनता आदि से जुडी जितनी यातनाएँ हो सकती हैं सब मिली। परिणामस्वरुप आपके लेखन में एक विद्रोह की भावना ने जन्म लिया। 'विद्रोह' आपको आपके पिताजी से वीरासत में मिला। इस बात का पता हमें उनकी आत्मकथा 'गूठन' की भूमिका पढने से मिल सकता है। वहाँ लेखक ने अपने स्कूल के अनुभवों का कथन किया है। जब वे तीसरी या चौथी कक्षा में पढ रहे थे उन्हें सब से पीछे बिठाया जाता था। पढाने से ज्यादा उनसे स्कूल में झाडू लगाने का काम खुद अध्यापक ही करवाते थे, जिसके चलते लेखक का बाल्यकाल ही मानो कुंठित हो गया। जब यह बात लेखक के पिता को पता चली तब उनकी प्रतिक्रिया देखने योग्य है पिताजी स्कूल जाकर बुलंद आवाज में अध्यापक को प्रश्न पूछते हैं– 'कौन–सा मास्टर है द्रोणाचार्य की औलाद, जो मेरे लडके से झाडू लगवावे है।'[१] इस बात को सुनकर हेडमास्टर क्रोधित हो कहता है– 'ले जा इसे यहाँ से, चूहडा होके पढने चला है .....जा चला जा..... नहीं तो हाड–जोड तुडवा दूँगा।'[२] इसके जवाब में पिताजी का कथन है – 'मास्टर हो इसलिए जा रहा हूँ.... पर इतना याद रखिए मास्टर यो चूहडे का यहीं पढेगा.... इसी मदरसे में और यो ही नहीं इसके बाद और भी आवेंगे पढने कू।'[३]

Aarhat Publication & Aarhat Journals is licensed Based on a work at *http://www.aarhat.com/eiirj/*

स्वाभिमानी, रूढियों एवं अंधविश्वास विरोधी–

कवि वाल्मीकि जीने अपने जीवन में हमेशा अपने स्वाभिमान को महत्तवपूर्ण स्थान दिया। उनका मानना है कि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी की दलित समाज को सबसे बडी देन शिक्षा और स्वाभिमान है। कवि ने अपने जीवन में हमेशा उक्त दो बातों को अपनाया जिसके चलते उन्हे कई बार अंधविश्वासों तथा रूढियों को तोडने के लिए संघर्ष करने पडे। उनका जन्म जिस समाज में हुआ था वह समाज धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत अविकसित था। उसमें मंत्र–तंत्र, जादू–टोना, पूजा–पाठ और पशुबलि जैसी कई रूढियाँ थी। कवि ने अनेक विज्ञाननिष्ठ लोगों का साहित्य पढा जिससे उनमे वैज्ञानिक दृष्टि विकसित हुई और उक्त अंधविश्वास का विरोध करने का सामर्थ्य उत्पन्न हुआ।

ISSN–2277- 8721

EIIRJ

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

Volume-X, Issues-I *Jan-Feb 2021*

वे खुद एक बार अंधविश्वास का शिकार कैसे हुए यह बताया है। एक बार वे बीमार थे, दवा–दारू चल रही थी उसी समय उनके घर एक रिश्तेदार आये जो अपने आप को भगत समझते थे। उन्होंने कहा कि आप को तो आवेश (भूत ने लपेट लिया) है। थोडी देर बाद वह जमीन पर बैठा और अचानक हिलने लगा। बीमारी के कारण पहले से कवि अशक्त थे भगत की मार सहन न कर सके, कवि चिल्लाने लगे और कहने लगे कि मुझे भूत ने नहीं पकडा है, यह भगत मुझे मार देगा। तब कवि कहते हैं– 'मेरा विश्वास पुख्ता हो गया था कि यह सबढोंगबाजी है जहाँ आस्था के सामने कोई तर्क मायने नहीं रखता था। न जाने कितने लोग इन भगतों ने मार डाले होंगे।[४]

संक्षेप में कवि ने अपने साहित्य में रूढियों तथा अंधविश्वासों का विरोध किया तथा प्रत्येक व्यक्ति में स्वाभिमान उत्पन्न होने के लिए शिक्षा से कोई दूसरा उपाय न होने की बात का प्रतिपादन किया।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की काव्यभाषा

ओमप्रकाश वाल्मीकि का संक्षिप्त परिचय इसके पूर्व हमने देखा है जिससे स्पष्ट हो जाता है कि कवि दलित समाज में उत्पन्न हुए हैं दलित कविता ही भाषा शोषित, पीडित उपेक्षित, दमित जनों की भाषा है। यह श्रमिक तथा मजदूरों की रोजमर्रा की भाषा है। कवि स्वंय दलित साहित्य की भाषा के बारे में लिखते हैं– 'भाषा जब जब परिकृत बनी है समाज से कटी है। वर्ण–विशेष की भाषा बनी है। संस्कृत भाषा के साथ भी यही हुआ वह एक खास वर्ग की बनकर रह गई। दलित सहित्य की भाषा में श्रम की महत्ता है। यह भाषा आम जीवन की बात करती।[५]वे दलित काव्य की भाषा को लेकर आगे लिखते हैं– 'भाषा का श्रृंगार शैली का चमत्कार, रस, छंद, अलंकार का मोह छोडकर दलित साहित्य ने भिन्न भाषा के साथ नये बिंब गढे हैं, पौराणिक मिथकों की भाषा बदली है, नये मिथक बनाएँहैं, गौरवान्वित झूठ तथा आस्था पर चोट की है और चमत्कार को तोडा है।[६]

षषा सामाजिक वस्तु है, व्यक्ति उसका अर्जन समाजसे ही करता है इस विशेषता के अनुसार दलित कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि की षषा का अवलोकन करें तो पाएँगे किवह दलित समाज की षषा है उसमें अलंकार और कोमलकांत पदावली का नितांत अभाव है। षषा पर सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक स्थितिका प्रभाव पडता है। हजारों वर्षों से शोषित, पीडित और अभावों से युक्त जीवन जी रहे दलित रचनाकारों की भाषा उनकी अपनी विशेषताएँ लेकर सामने उपस्थित होती है। वाल्मीकि जी की कविता अपनी विशेषताओंसे युक्त भाषा के माध्यम से हमारे सामने उपस्थित होती है जिसमे अभिजात सौंदर्यबोध नहीं मिलता। वे अपनी भाषा के बारे मे लिखते है–'दलित साहित्य ने अपने लिए सहज, सरल आम बोलचाल की भाषा को अपनाया, दलितों के जीवन की विसंगतियाँ, उत्पीडन, शोषण और दमन की अभिव्यक्ति के लिए यही भाषा सटीक लगती है।[७]

ओमप्रकाश वाल्मीकि का शब्द वैभव:

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं का अवलोकन करने के बाद उनमे उपलब्ध तत्सम शब्द निम्नानुसार मिलते हैं जैसे– द्रोण, पाषाण, अन्न, प्रतीक्षा, धैर्य, भूखंड, संकीर्ण, पवित्र, स्नान, पशु बलि, आत्मा, पिशाच, गंध, ध्वनि, रक्त, जल, पीडा, दुख सूर्य, शौर्य, धैर्य, गर्भ, नेत्र इ.

ISSN–2277- 8721

EIIRJ

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

Volume-X, Issues-I *Jan-Feb 2021*

प्रमुख तदभव शब्द निम्नानुसार हैं– नींद, नयन, भूख, प्यास, घर, गरम, गाँव, ऊंगली, जंगल, साँझ, मुठठी, धरती, सपना, नाच, दीया, रात, गाय, हाथ इ. प्रमुख देशज शब्द निम्नानुसार:– डोम, चूहडा, बाप, खांड, घाट, कुहासा, पगडंडी, कनखियाँ, जाति इ.

प्रमुख विदेशी भाषाओंके शब्द निम्नानुसार हैं–

अरबी फारशी के शब्द –जैसे खामोश, चाकू, खूशबू, रिश्ता, ताश, जमीन, फासला, देहलीज, मूर्दा, सडक, जुल्म, अखबार, किताब, गुलाम, सैलाब इ.

अंग्रेजी शब्द:– रोड, स्कूल, कॉलेज, इंटर, साईन, बोर्ड, बैग, फुटबॉल, प्रायमरी, सायरन क्लर्क इ.

ओमप्रकाश वाल्मीकि की काव्य शैली

ओमप्रकाश वाल्मीकिने अपने काव्य में आत्मकथनात्मक शैली तथा प्रश्नात्मक शैली को वरीयता दी है। उनके समग्र काव्य का अनुशीलता करने के बाद ये प्रमुख दो शैलियाँ हमारे सामने उभरकर आती हैं। आगे हम उनके शैलियों को उदाहरणों के माध्यमसे स्पष्ट करेंगे।

आत्मकथनात्मकशैली:

आत्मकथनात्मक शैली में रचनाकार 'मैं' के माध्यमसे अपनी बात रखते हैं। कवि सदियों का संताप में अपनी व्यथा आत्मकथनात्मक शैली में रखते हुए लिखित हैं–

'मैने दुख झेले
सहे कष्ट पीढी–दर पीढी इतने
फिर भी देख नहीं पाये तुम
मेरे उत्पीडन को।' अथवा

मैं .... खेतों में?
फिर भी भूखा हूँ
निर्माता मैं महलों का
फिर भी निष्कासित हूँ
प्रताडित हूँ।[८]

उक्त पंक्तियों से कवि अपने आपको सभी वस्तुओं का निर्माता होते हुए भी निष्कासित, उपेक्षित जीवन जीने को बाद्य दलितों का चित्रण करते नजर आते हैं।

प्रश्न शैली:

इसमें कवि अपने मन में उत्पन्न प्रश्नों को कविता के माध्यम से सामने रखता है। वर्षो से दमित, प्रताडित दलित कवि अब समाज को प्रश्न कर रहे हैंओमप्रकाश वाल्मीकि के शब्दो में–

'यदि तुम्हें

ISSN–2277- 8721

EIIRJ

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

Volume-X, Issues-I *Jan-Feb 2021*

मरे जानवर को खींचकर
ले जाने के लिए कहा जाए
और, कहा जाए ढोने को
पूरे परिवार का मैला
पहनने को दी जाए उतरन
तब तुम क्या करोगे?[९]

अथवा

'कभी सोचा है
गंदे नाले के किनारे बसे
वर्ण व्यवस्था के मारे लोग
इस तरह क्यों जीते हैं?
तुम पराए क्यों लगते हो उन्हें
कभी सोचा हैं?[१०]

स्पष्ट है उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने समाज के सामने अपने मन की भावनाएँ तथा प्रश्न रखे हैं। कवि समाज से उत्तर चाह रहे हैं।

निष्कर्ष:

निष्कर्षत: कहा जा सकता हैं कि ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित परिवार में जन्में तथा प्रारंभिक जीवन से ही दलित दंश के शिकार बने। शिक्षा प्राप्ति में संघर्ष करना पडा और जीवनभर संघर्षने उनका साथ नहीं छोडा। वे अपने साथ अपने समाज के जीवन को सुधारणे के लिए प्रयत्नरत दिखाई देते रहें उन्होंने यह जान लिया था कि समाज तभी आगे बढेगा जब वह शिक्षित होगा। अपने संपूर्ण काव्य लेखन में उनका समाज सुधार का प्रयास दिखाई पडता हैं। तत्सम, तदभव देशज तथा विदेशी भाषाओं के शब्दों से लेकर देशजशब्दों के योग से उनका काव्य फलता फूलता नजर आता है। प्रश्नात्मक तथा आत्मकथनात्मक शैलियों के माध्यम से कवि अपने मन में उत्पन्न प्रश्नों को समाज के सामने रखते नजर आते हैं। संक्षेप में उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से जो करना चाहा कर दिखाया है।

संदर्भ ग्रंथ:

१. ओमप्रकाश वाल्मीकि – 'जूठन' १९९७,राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, २०१२ भूमिका, पृ. सं. १६
२. ओमप्रकाश वाल्मीकि – 'जूठन' १९९७ राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, २०१२भूमिका पृ. सं. १६
३. ओमप्रकाश वाल्मीकि – 'जूठन' १९९७ राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, २०१२भूमिका पृ. सं. १६
४. ओमप्रकाश वाल्मीकि – 'जूठन' १९९७ राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, २०१२भूमिका पृ. सं. ५६
५. अन भै. संपा. डॉ. रतनकुमार पांडेय, अक्तुबर डिसेंबर २००४ पृ. सं. ११

ISSN–2277- 8721

EIIRJ

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

Volume-X, Issues-I *Jan-Feb 2021*

६. दलित साहित्स का सौंदर्यशास्त्र– ओमप्रकाश वाल्मीकी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, २०१४, पृ. सं. ९०

७. दलित साहित्स का सौंदर्यशास्त्र– ओमप्रकाश वाल्मीकी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, २०१४, पृ. सं. ८२

८. सदियों का संताप –ओमप्रकाश वाल्मीकी, गौतम बुक सेंटर २०१२, पृ. सं. २४,२५

९. सदियों का संताप –ओमप्रकाश वाल्मीकी, गौतम बुक सेंटर २०१२,पृ. सं. ४९

१०. बस: बहुत हो चुका – ओमप्रकाश वाल्मीकि, वाणी प्रकाशन, १९९७,नई दिल्ली, पृ.